वैदिकता और इतिहास का आंशिक रूप

लेखक- श्री. वसन्तराव मा. वकील

अभ्युदय का अर्थ है उन्नति अर्थात् ऐहिक संपन्नता और निःश्रेयस है मोक्ष अथवा आत्मकल्याण। इसीका विवरण आचार्य ने किया है –

''जगतः स्थितिकारणं प्रजानाम् साक्षाद् अभ्युदयनिः श्रेयस हेतुः

यः धर्मः ब्राह्मणाद्यैः वर्णिभिः आश्रमिभिःच श्रेयोदर्शिभिः अनुष्ठीयमानः।

जगत् की स्थिति अर्थात् धारण करनेवाला मनुष्यों को प्रत्यक्ष उन्नतिकारक और मोक्ष प्राप्ति का हेतु है वहीं धर्म है और उसीका आचरण अपने कल्याण के लिए ब्राह्मणादि वर्णों ने तथा चारों आश्रमियों को करना चाहिये।

केवल मोक्ष अथवा ऐहिक उन्नति मात्र ऐसा एकांगित्व वेद को मान्य नहीं। दोनों का सामंजस्य हो वही उचित है।

ईशावास्य उपनिषद् में यही अभ्युदय निःश्रेयस के हेतु समान रूप से ज्ञातव्य बतलाये है।

को प्रपंच ज्ञान से ही पार कर सकते हैं जिससे जीवन सुविद्य, समृद्ध और स्वस्थ होता है।

मृत्यु को पार करना और अमृत्व प्राप्त करना दोनों भिन्न बातें हैं। एक नहीं, स्टेशन पर पहुँचना और गन्तव्य स्थान को जाना इतना अंतर इन दोनों में हैं।

जीवन निर्वेध निरुपाधिक होने से ब्रह्मविद्या का साधन भी यशस्वी होता है। मोक्ष साधन में अब जीवनजनित अथवा जीवन में अभावजनित कोई बाधा नहीं है। जीवन में प्राप्त सभी कर्तव्य कर्म

संपन्न किये हैं इसलिये उनका समापन भी हुआ है। अनहंकार भावना से कर्म करनेपर उनका बंधन नहीं। कर्मफल जो पुण्य और पापरूपी है उनका परलोक मत कोई परिणाम नहीं। वह कर्म चित्त शुद्धि का कारण है। इसीलिये मनुष्य को मोक्षाधिकार की पात्रता देनेवाला है।

किन्तु यदि एक ही ज्ञान की उपासना की जाए तो? केवल ऐहिक ज्ञान अथवा केवल मोक्षकाही ज्ञान, ऐसा विचार रखनेवाले जो हैं उनके लिये कहा है –

"अंधं तमः प्रविशंति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः॥

जो केवल अविद्या की उपासना करते हैं वे अंधकार में जाते हैं; तथा उससे भी मानो गहन अंधकार में वे जाते हैं जो केवल विद्या के ही उपासक हैं।

बडी विलक्षण बात है कि विद्या की उपासना करनेवाला अंधकार में जाता कहा है। अविद्या की उपासना से प्राप्त अंधकार की बात तो समझ में आती है किंतु विद्या से भी अंधकार, जो अविद्याप्राप्त अंधकार है उससे भी गहन अंधकार। ऐसा ही है। धर्म की व्याख्या का यह रहस्य है।

दुःख की निवृत्ति नहीं हुई तो आगे बढेंगे कैसे? तीन बार शान्तिः शान्तिः शान्तिः कहा जाता है। आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक, दुःखों की निवृत्ति के लिये, निःसंग कर्म ही चित्त शुद्धि का कारण और मोक्ष का साधन बनता है।

कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करें – कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविवेत् शतं समाः। कर्म कोईभी हो – व्यावहारिक, कर्मकांडात्मक अथवा उपासना-सादानोअनहंकारितासे वह लिप्त नहीं करता।

भगवान् श्रीकृष्ण ने कर्मयोग का उपदेश विवस्वान् को दिया था यह पूर्वकालीन परंपरा बतायी थी। उदाहरण विवस्वान् मनु, इक्ष्वाकु इस राजर्षि परंपरा का है जो ऐहिक अभ्युदय के सर्वथा योग्य है।

वैदिक विचारधारा का यह तात्विक स्वरूप है। इसका आचरण करनेवाले राजर्षियों के इतिहासपुराण प्रसिद्ध चरित्र भारतीयों को अज्ञात नहीं है, यही प्रवृत्ति लक्षणधर्म सर्वत्र होने से जीवन और आत्मकल्याण का सामंजस्य रहा। जिस प्रकार गृहस्थाश्रम अन्य आश्रमों का आश्रयभूत है उसी प्रकार यह राजर्षिमान्य धर्म निःसंगवृत्ति का, निवृत्ति धर्म का, ज्ञान वैराग्य का आधारभूत है, "शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचिंता प्रवर्तते" राष्ट्र राजा के शस्त्र से सुरक्षित रहता है, तभी शास्त्र चिंतन हो सकता है।

प्रजापति महर्षि मरीचि अत्रि अंगिरा पुलस्त्य फुलह क्रतु वसिष्ठ आदि महापुरुषों के पुत्र प्रपौत्र प्रसिद्ध राजवंशों के प्रवर्तक हुए तथा ज्ञान वैराग्य युक्त निवृत्तिमार्ग के प्रवर्तक सनक सनंदन सनातन सनतकुमार आदिकी शिष्यपरंपरा में महाज्ञानी, महासिद्ध, ब्रह्मविश्व, का संप्रदाय और वैराग्य का आदर्श अक्षुण्ण रखनेवाले महात्मा हुए हैं। स्वयं भगवानने ही आदि काल में दोनों मार्गों का प्रचलन किया है। वेदप्रतिपादित कर्मयोग त्रैगुण्यविषय है। जीवन कर्तव्य के रूप में उसीका आचरण निष्काम भूमिका से करनेपर वह वेदान्तधर्म का आधार होता है।

प्रवृत्तिधर्म समाजहितकारी है, निवृत्तिधर्म व्यक्तिगत मोक्षसाधक है। वैदिक धर्मकांड विषय और निवृत्तिमार्ग का विरोध नहीं हैं। धर्म, अर्थ, काम ये त्रिवर्ग और प्रकृति पुरुष विचार का सांख्य यह जीवन के उपयोगी है और चतुर्थ वर्ग मोक्ष तथा उसका साधनोपाय योग यह आत्मकल्याणकारी है। यही वेदान्त है; वेद का अंतिम भाग है जिसे उपनिषद् ब्रह्मविद्या कहते हैं।

उपनिषद ग्रंथ केवल ब्रह्मर्षियों के ही नहीं अपितु राजर्षियों के भी उपदेशों से संपन्न है।

भारतीय तत्वज्ञान अथवा वेदवेदान्त प्रतिपादित धर्म अथवा आध्यात्मिकता से भारत के लोगों की अवनति हुई है, ये संसार से विमुख होकर, सभी कुछ माया मिथ्या कहकर हीनदीनताको प्राप्त हुए हैं। भक्तिज्ञान वैराग्य वेद यज्ञ सब व्यर्थ है।

संसार छोडो और भगवद् भजन करो यही कल्याण है – ऐसा माननेवाले लोग कभी उन्नत नहीं होंगे। यह विचार आधुनिक काल में सर्वपरिचित है, और पाश्चिमात्यों के उदाहरण से भौतिक विज्ञान के पक्ष में विचार करनेवाले "इतिहासकार" इसीका प्रतिपादन करते हैं। अपने पुरातन इतिहास से अनल्पान अथवा इतिहास को दंतकथा और लोककथा मानने पर यही निराधार कल्पना होगी।

वैभव और विज्ञान के वृत्तान्त काल्पनिक ही मालूम होंगे। विदेशी राज्यकर्ताओं के शासन काल में भारत में जो जो अनिष्ट धारणाएँ उपस्थित की गई वे दृढमूल होती गयी।

इतिहास और राष्ट्र के विषय में एक अंग्रेज कूट नितिज्ञ का – कदाचित् मेकॉले का वाक्य है – "इफ यू विश टु डिस्ट्रॉय एनेशन; डिस्ट्रॉय इटस् हिस्ट्री फर्स्ट ॲड दि नेशन विल बी ॲबॉलिशड् ऑफ इट्स् ओन ॲकौर्ड". यदि आप किसी राष्ट्र को नष्ट करना चाहते हैं तो पहले उसका इतिहास नष्ट कर दो। और फिर वह राष्ट्र स्वयमेव नष्ट हो जायेगा।

भारत में वेद और वैदिकता अब भी विद्यमान है, "यूनानो मिस्र रोमा सब मिट गये जहाँ से" यही सत्य है कि ऐसी कुछ बात है कि भारतीयों का अस्तित्व अबतक मिटा नहीं न मिटेगा।

भारतीय तत्वविचार की रुपरेषा तो अब भी विद्यमान है। उसे संपूर्ण प्रकारसे और सभी अंगो से जब आचरण में लाया गया था वह है हमारा पुरातन इतिहास। उसकी रूपरेखामात्र देखनेपर अतीत काल की कल्पना उतनी अस्पष्ट नहीं रहेगी कि जिससे उपर्युक्त प्रकार की गलत धारणा निर्माण हो।

ओऽम् मृत्युरीषे द्विपदां मृत्युरीषे चतुष्पदाम्।
तस्मान्त्वां मृत्योर्गोपते रुद्मरामि स मा बिभेः॥

अथर्व० ८/२/२३

(पृष्ठ ३० का शेष)

प्रकार से आराधना करने से उसे द्रव्यप्राप्ती हो गई। अगले जन्म में वही कर्दम ऋषी हो गया। (गणेश पु. उपा. ५२-५३)

गणेश चौथ का व्रत –

इस दिन गणेशजी की सुवर्ण मूर्ति बनाकर उसकी प्राणप्रतिष्ठा के साथ पूजा करके बाद में उसका हवन कराकर वह मूर्ति ब्राह्मण को दान देनी चाहिए। इससे फल ऐश्वर्य प्राप्ति होती है। (व्रतराज)

सन्दर्भ :- भारत संस्कृति कोष
पं. महादेव शास्त्री जोशी
खण्ड २ और ३

प्रस्तुति,
श्री. शेलार एस. एस.
गुरु गंगेश्वर धाम,
नाशिक